स्वाधीनता आंदोलन और अभिप्रेरणा से युक्त हिंदी काव्य

[1]डॉ0 राजेश कुमार*, [2]ज्योत्स्ना

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग), राजकीय महाविद्यालय, बी०बी० नगर (बुलन्दशहर)
शोधार्थिनी, हिंदी विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
***Email ID**: dr.rajesh.thakur05@gmail.com*

Accepted: 07.02.2023 **Published**: 01.03.2023

मुख्य शब्दः स्वाधीनता आंदोलन ।

शोध आलेख सार

स्वाधीनता शब्द के लिए हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता, अपराधहीनता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है अर्थात् अपने ही अधीन होना स्वाधीनता है। आजादी को लेकर देश में व्याप्त उथल–पुथल को हिंदी कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए स्वतंत्रता आंदोलन के आरम्भ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक भिन्न–भिन्न चरणों में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत काव्य लिखा।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

© *IJRTS Takshila Foundation*, डॉ0 राजेश कुमार, *All Rights Reserved.*

बाल कृष्ण शर्मा नवीन जी ने 'विप्लव गायन' के माध्यम से आह्वान किया

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाये,
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आये।
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि–त्राहि रव नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का धुँआधार जग में छा जाए . . .।।"[i]

भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का राष्ट्रीय उत्सव 1850 के बाद राष्ट्रव्यापी हुआ। इससे पूर्व राष्ट्रीयता की भावना का विस्तार स्थानीय स्तर पर हुआ था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और महात्मा गाँधी के भारत आगमन में 1815 ई० के पश्चात् स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय होने के पश्चात् यह आंदोलन व्यापक होता चला गया। हिंदी साहित्य में यह समय नवजागरण काल का था। भारतीय साहित्य में वर्णित राष्ट्रवादी तथा सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट करते हुए नगेन्द्र जी लिखते हैं कि **"जिस प्रकार अनेक धर्मों,**

विचारधाराओं और जीवन प्रणालियों के रहते हुए भी भारतीय संस्कृति की एकता असंदिग्ध है, इसी प्रकार और इसी कारण से अनेक भाषाओं और अभिव्यंजना पद्धतियों के रहते हुए भी भारतीय साहित्य की एकता का अनुसंधान भी सहज एवं संभव है। भारतीय साहित्य प्राचुर्य और वैविध्य का पर्व है उसकी यह मौलिकता और भी अधिक रमनीय है।''[ii]

आजादी के संघर्ष की लड़ाई दरसल बहुत लम्बी लड़ाई थी, जिससे लोगों के अन्दर कभी–कभी निराशा की लहर दौड़ जाती थी। ये बात 1930 से और 1942 के बीच की है जब 'नवीन' जी को भी निराशा ने घेर लिया था उस समय देश के युवाओं के लिए उन्होंने एक 'पराजय–गीत' लिखा–

''आज खड़ग को धार कुंठिता
है, खाली तृणीर हुआ,
विजय–पताका झुकी हुई है
लक्ष्य–भ्रष्ट यह तीर हुआ।''[iii]

नवीन जी को अपने भारत देश पर गर्व उस समय था जब वह आजाद नहीं था पराधीन देश पर गर्व करना बहुत ही साहस और गौरव की बात थी। वह लिखते हैं कि

कोटि–कोटि कंठों से निकली
आज यही स्वर धारा है,
भारतवर्ष हमारा है, यह
हिंदुस्थान हमारा है।''

राष्ट्रभाषा हिंदी के शब्द सितारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त गुलाम हिंदुस्तान में शब्दों के माध्यम से देश में आजादी की नई अलख जगा दी थी। यहाँ तक स्वयं महात्मा गाँधी इनकी कलम के कायल थे। इनकी लोकप्रिय और अमर काव्य कृति भारत–भारती ने देश–प्रेम और जनचेतना की ऐसी लौ जगाई जिससे प्रेरित होकर समाज के हर वर्ग से लोग स्वतंत्रता संग्राम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने लगे। सोई हुई जनता को जागृत करने के लिए 'भारत भारती' में देश–प्रेम की भावना को उन्होंने सर्वोपरि स्थान दिया।

जब तक समाज, समाज के लोग अपनी समस्याओं पर विचार नहीं करेंगे तब तक कदापि अपने कल्याण की ओर अग्रसर नहीं हो सकेंगे। इसी विचार को अपनी रचना का आधार बनाकर कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारत–भारती की रचना की, जिसमें सभ्यता और संस्कृति की पुरातनता का उल्लेख निम्नवत् है–

''हाँ, वृद्ध भारत ही संसार का सिर मौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
× × × × ×
यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य है;
विद्या कला–कौशल्य सबके जो प्रथम आचार्य है।''

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलन था, जिसका मुख्य स्वर साम्राज्यवाद विरोधी तथा सामन्तवाद विरोधी था। सूर्य कवि रामधारी सिंह दिनकर उन कवियों में से हैं जो रणभूमि में शांति के गीत नहीं बल्कि बालों की सनसनाहट सुनना पसंद करते हैं। दिनकर की कविताएँ ऐसी थीं कि साधारण व्यक्ति के भी मन में आजादी के संघर्ष में स्फूर्ति और शक्ति का संचार उत्पन्न कर देती है। दिनकर के शब्द महज शब्द नहीं होते उनके शब्दों में एक हुंकार होती है उनका विपुल साहित्य राष्ट्रीय चेतना और वीरता से युक्त हैं–

''कलम आज उनकी जय बोल,
जला अस्थियाँ बारी–बारी,
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेडी पर,
लिए बिना गर्दन का मोल,
कलम, आज उनकी जय बोल।''

दिनकर जी अंग्रेजों के शासन को बनिया राज कहते थे। शोषक उपनिवेशवाद के बारे उन्होंने कहा है कि–

''हाय! छिनी भूखों की रोटी, छिना नग्न का अर्धवसन है
मजदूरों के कौर छिने हैं, जिन पर उनका लगा दसन है।''[iv]

इन पंक्तियों में देश की बालाएँ जो पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण कर रही है उसका तीव्र आक्रोश निकल कर सामने आया है। भारतेन्दु ने भी ''पै धन विदेश चलि जात है यहै अति ख्वारी'' कहकर अंग्रेजी राज की निंदा की है।

भारतेन्दु जी को हिंदी साहित्य में पितामह कहा जाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाटक 'भारत दुर्दशा' में पहली बार राष्ट्रीय चेतना की बात की गई थी। वे भारतीयों से भारत की दुर्दशा पर रोने और दास दुर्दशा का अंत करने का आह्वान करते हैं। वे ब्रिटिश राज और भारत के आपसी कलह को इस दुर्दशा का कारण मानते है–

''रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।''[v]

अंग्रेजों की शोषण नीति के लिए भी भारतेन्द्र जी लिखते हैं कि–

''भीतर–भीतर सब रस चूसे हँसि–हँसि के तन–मन–धन मूसै।
ज़ाहिर बातन में अति तेज़, क्यों सखि सज्जन। नहिं अंगरेज।।''

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अंग्रेजों के शासन को देशवासियों के लिए कल्याणकारी समझ कर उनकी प्रशंसा भी की है। विक्टोरिया के द्वितीय पुत्र ड्यूक ऑव एडिम्बरा भारतवर्ष आए तो उस समय उन्होंने 'श्री राजकुमारसुस्वागत–पत्र' लिखा। उस समय वे उदार प्रवृत्ति के भी थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के प्रति कुछ भयभीत भी हुए थे, वे लिखते हैं कि

''कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जल बाल नासी।

जिन भय सिर न हिलाय सकत कहुँ भारतवासी।।''[vi]

भारतेन्दु के युग के ही कवि प्रताप नारायण मिश्र ने भी स्वदेश की शासन व्यवस्था स्वदेशी लोगों के हाथों में ही होने का आह्वान किया है। भारतीय जनता को जागृत करते हुए कहते हैं–

''सर्बस लिए जात अंगरेज

हम केवल लेक्चर के तेज''[vii]

इस युग के कवि लेखक, नाटककार होने के साथ–साथ पत्रकार भी थे। पत्रकारिता के माध्यम से समाज में आजादी की मशाल को जलाए रखा। दादा भाई नौरौजी को विदेश में 'काला' कहा गया तो उन्होंने अपने आक्रोश को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया–

''अचरज होतु तुमहुँ सम गोरे बाजत कारे,

तासों कारे 'कारे' शब्दहु पर हैं वारे।''[viii]

इसी क्रम में कविवर शंकर ने 'बलिदाल–गान' में कहा था–

''देशभक्त वीरों, मरने से नेक नही डरना होगा

प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।''[ix]

नाथूराम शर्मा शंकर आर्य समाज से जुड़े थे। उनके ऊपर राष्ट्रीय आंदोलनों का गहरा असर पड़ा उन्होंने देश की सामाजिक कुरीतियों, आड़म्बरों पर तीखा व्यंग्य किया था।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई का नेतृत्व चमकती तलवार लेकर सामने आता है जिनके ऊपर हिंदी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान ने कविता लिखी–

''बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।''[x]

सुभद्रा कुमारी चौहान की अधिकांशतः कविताएं देश–प्रेम पर लिखी हैं देशवासियों के मन में देशभक्ति की भावना, उत्साह जागृत करना, आजादी के लिए संघर्ष एवं युद्ध करने के लिए कविताएँ लिखना उद्देश्य रहा है। इनकी कविता 'वीरों का कैसा हो वसंत' में जो सच्चा वीर है उन्होंने प्रण ले लिया कि अंग्रेजों के चंगुल से देश को आजाद करा कर रहेंगे। सुभद्रा जी का कहना है कि युद्ध की भूमि ही बसंत है या हंसी मस्ती के साथ जीना बसंत है? यह कविता प्रश्न शैली में लिखी गयी है कि वीरों का बसंत कैसा होना चाहिए। बसंत से तात्पर्य खुशियों से हैं–

''वीरों का कैसा हो बसंत

आ रही हिमालय से पुकार

है उदधि गरजता बार–बार

× × × ×

वीरों का कैसा हो बसंत''

उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण हैं। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला महान स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका थीं।

द्विवेदी युग के कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने देशभक्ति से ओत–प्रोत कविता 'पुष्प की अभिलाषा' केवल छः पंक्तियों में की है और एक पुष्प के माध्यम से ऐसी कविता लिखी जिसमें आजादी की लड़ाई में शहीद सपूतों के प्रति अगाध श्रद्धा प्रकट की–

''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंजा जाऊँ
चाह नहीं में गुंथू अलकों में विंध प्यारी को
–ललचाऊँ''

इनकी सभी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुखर होता है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के शोषण तंत्र का बारीक विश्लेषण करती 'कैदी और कोकिला' कविता बहुत लोकप्रिय रही हैं। इस कविता में भारतीय स्वाधीनता सेनानियों के साथ जेल में किए गए गलत व्यवहार और मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है।

स्वाधीनता आंदोलन का यह स्वर साहित्य के माध्यम से जनता को जातीय एकता, धार्मिक सौहार्द्रता, भाषायी समन्वय और स्वराज के रूप में देखना था। साहित्य और समाज का गहरा नाता है। साहित्यकार साहित्य के माध्यम से समाज को जगाने का कार्य करते है। स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए कवि व साहित्यकार एक ओर से राष्ट्रीय भावों को अपनी कविता का विषय बना रहे थे तो दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना को हवा दे रहे थे। भारत की राष्ट्रीयता का आधार राजनीतिक एकता न होकर सांस्कृतिक बनी रहे। इकबाल जी कहते हैं–

''कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा''

वर्तमान समय में भी श्यामलाल गुप्त पार्षद का यह गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंड़ा ऊँचा रहे हमारा' गुनगुनाते हैं और इकबाल जी की नज़्म 'सारे जहाँ से अच्छा, हिंदुस्ता हमारा' लेकिन देश की मौजूदा परिस्थिति इससे अलग है। आज भी पहले के जैसे साहित्यकारों की एवं रचनाओं की बहुत आवश्यकता है, जिससे देश में अराजकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, बाह्य आड़म्बरों से जनता को बचा सके और स्वतंत्रता सेनानी के लक्ष्य समान थे– राष्ट्रीय आज़ादी और राष्ट्रीय स्वाधीनता, एकता एवं अखण्डता। साहित्य समाज में रोशनी फैलाते का कार्य करता है और उस दौर में वह आजादी का रास्ता दिखाते हुए साहित्यरूपी मशाल हाथ में लेकर क्रांतिकारियों के अन्दर जोश एवं अभिप्रेरित कर रहे थे। इसके लिए एक ही भाषा में अभिव्यक्ति हो और सामान्य जन समझ भी सके तो हिंदी भाषा का प्रयोग करना बहुत जरूरी था भारतेन्दु जी कहते हैं कि–

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन

पै निज भाषा ज्ञात बिन, रहत होत के हीन।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[i]- कविताकोश.ओआरजी

[ii]- डॉ० नगेन्द्र, आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली, पृ०सं० 92

[iii]- विश्वम्भर 'मानव', आधुनिक कवि, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ०सं० 99

[iv]- रामधारी सिंह दिनकर, विजेन्द्र नारायण सिंह, साहित्य अकादमी, पृ०सं० 56

[v]- भारत दुर्दशा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ०सं० 17

[vi]- रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ०सं० 87

[vii]- रामधारी सिंह दिनकर, विजेन्द्र नारायण सिंह, साहित्य अकादमी प्रकाशन, पृ०सं० 56

[viii]- डॉ० नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, 73वाँ संस्करण, पृ०सं० 452

[ix]- वही, पृ०सं० 477

[x]- सुभद्रा कुमारी चौहान, मुकुल, श्री चंद्रशेखर शास्त्री, पृ०सं० 47